Toppersnotes
Unleash the topper in you

# UPSC
# Prelims

## संघ लोक सेवा आयोग

भाग – 2

## आधुनिक इतिहास

SIERRA INNOVATIONS

# विषयसूची


| S No. | Chapter Title | Page No. |
|---|---|---|
| 1 | भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन | 1 |
| 2 | मुग़ल साम्राज्य का पतन | 10 |
| 3 | नवीन राज्यों का उदय | 14 |
| 4 | भारत में ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण और विस्तार | 17 |
| 5 | 1857 तक प्रशासनिक संगठन | 34 |
| 6 | 1857 का विद्रोह | 40 |
| 7 | 1858 के बाद प्रशासनिक परिवर्तन | 47 |
| 8 | सामाजिक–धार्मिक सुधार आंदोलन | 52 |
| 9 | ब्रिटिश शासन के अधीन अर्थव्यवस्था | 68 |
| 10 | शिक्षा और प्रेस का विकास | 72 |
| 11 | ब्रिटिश शासन के विरूद्ध जन आंदोलन | 79 |
| 12 | राष्ट्रवाद का उदय (उदारवादी चरण 1885 – 1905) | 91 |
| 13 | उग्र राष्ट्रवाद का युग–उग्रवादी चरण (1905–1909) | 96 |
| 14 | जन आंदोलन गांधी युग (1917 – 1925) | 105 |
| 15 | स्वराज के लिए संघर्ष (1925–1939) | 112 |
| 16 | स्वतंत्रता की ओर (1940–1947) | 125 |
| 17 | भारत के गवर्नर जनरल और वायसराय | 136 |
| 18 | महान भारतीय व्यक्तित्व | 142 |

# 1 CHAPTER भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन

- रोम साम्राज्य के पतन के बाद मिस्र और फारस पर अरबों का नियंत्रण हो गया जिससे यूरोप की भारत तक सीधी पहुँच बाधित हो गई। परिणामस्वरूप इसने मसालों और रेशम जैसी विलासिता की वस्तुओं के व्यापार को प्रभावित किया ।
- 1453 ई. में ऑटोमन तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया पर कब्जा करने के साथ ही यह स्थिति और गंभीर हो गई क्योंकि इससे व्यापार मार्गों पर उनका नियंत्रण और सख्त हो गया। इसने यूरोपीय देशों को भारत तक पहुँच बनाने के लिए समुद्री मार्ग खोजने के लिए प्रेरित किया।
- 15वीं सदी के पुनर्जागरण के दौरान नौवहन और जहाज निर्माण की तकनीकों में हुई प्रगति ने अन्वेषण या खोजों को और बढ़ावा दिया।
- जब वेनिस और जेनोआ जैसे इतालवी नगर ऑटोमन साम्राज्य का मुकाबला नहीं कर सके, तब उत्तरी यूरोपीय देशों ने पुर्तगाल और स्पेन का समर्थन किया। प्रिंस हेनरी द नेविगेटर के नेतृत्व में पुर्तगाल ने इन प्रयासों का नेतृत्व किया और 1454 में पोप का समर्थन प्राप्त किया।
- हालाँकि हेनरी अपने जीवनकाल में सफलता नहीं देख सके परंतु उनकी दूरदर्शिता 1497 में वास्कोडिगामा की ऐतिहासिक भारत यात्रा में साकार हुई। इससे पहले 1494 की टॉरडेसिलास की संधि (Treaty of Tordesillas) ने पुर्तगाल को पूर्वी क्षेत्रों पर दावा करने का अधिकार दे दिया था जिसने भारत में उनकी उपस्थिति का मार्ग प्रशस्त किया।

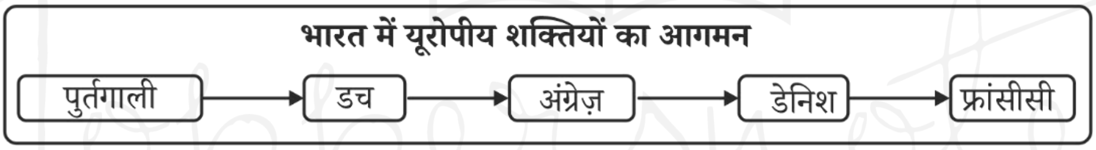


## भारत पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए यूरोपीयों द्वारा किए गए प्रयास

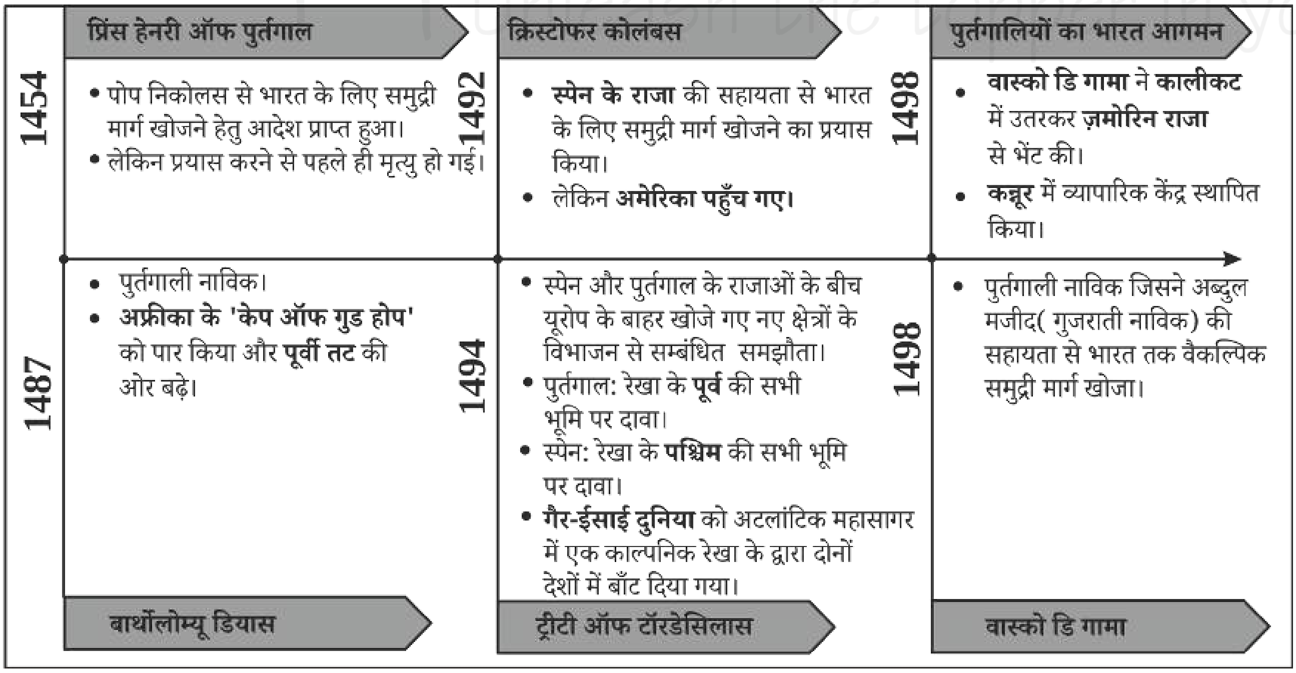

**1. भारत में यूरोपीय शक्तियों के आगमन के प्रमुख कारण:**

- ✓ औरंगज़ेब की मृत्यु (1707) के बाद कमजोर शासक और क्षेत्रीय शक्तियों के विघटन के कारण अस्थिरता का जन्म हुआ।
- ✓ भारत की अपार संपत्ति ने भी यूरोपीय शक्तियों को आकर्षित किया।
- ✓ मसाले, मलमल, रेशम आदि जैसी भारतीय वस्तुओं की यूरोप में भारी माँग रहती थी।
- ✓ व्यापार मार्गों पर अरबों का नियंत्रण और यूरोपीयों की तकनीकी प्रगति ने भी इनको बाहर प्रसार करने के लिए प्रेरित किया।
- ✓ बढ़ते औद्योगीकरण के कारण नए बाजारों की खोज और विस्तार की भावना भी भारत आगमन का एक प्रमुख कारण था।

**2. भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन**

| विवरण | पुर्तगाली | डच | अंग्रेज़ | डेनिश | फ्रांसीसी |
|---|---|---|---|---|---|
| **स्थापना वर्ष** | 1498 | 1602 | 1600 | 1616 | 1664 |
| **प्रथम फैक्ट्री** | कालीकट, 1500 | मछलीपट्टनम, 1605 | सूरत, 1613 | त्रंकेबार (तंजावुर के पास), 1620 | सूरत, 1668 |
| **मुख्यालय** | गोवा | पुलिकट | कलकत्ता | त्रंकेबार | पांडिचेरी |
| **व्यापारिक केंद्र** | कालीकट, कन्नानोर, कोचीन, गोवा, दीव | पुलिकट, सूरत, चिनसुरा, कोचीन | सूरत, मछलीपट्टनम, मद्रास, बॉम्बे, कलकत्ता | त्रंकेबार, सेरामपुर | माहे, यनम, कराईकल, पांडिचेरी, चंद्रनगर |
| **भारत से वापसी** | 1961 | 1825 | 1947 | 1845 | 1954 |

# भारत में विदेशी शक्तियाँ

**1. पुर्तगाली**

- ✓ 1487 में बार्थोलोम्यू डियास ने केप ऑफ गुड होप को पार किया तथा अंततः 1498 में वास्को डी गामा भारत पहुँचे जिससे यूरोपीय व्यापार के लिए समुद्री मार्ग खुल गया।

**1.1 भारत में प्रमुख पुर्तगाली व्यक्तित्व:**

| | |
|---|---|
| **वास्को डी गामा** | ➢ ये मई 1498 में गुजराती नाविक अब्दुल मजीद की मदद से कालिकट पहुँचे।<br>➢ इन्होंने कालिकट के राजा ज़मोरिन से व्यापार की अनुमति प्राप्त की।<br>➢ इन्होंने 1501 में कन्नानोर में व्यापारिक फैक्ट्री स्थापित की।<br>➢ ये तीन बार भारत आए: 1498, 1501 और 1524 में<br>➢ 1524 में कोचीन में इनकी मृत्यु हो गई। |
| **पेड्रो अल्वारेज़ केब्राल** | ➢ इसने 1500 में कालिकट में पहली यूरोपीय फैक्ट्री स्थापित की।<br>➢ इसने पुर्तगालियों पर अरब आक्रमण का सफलतापूर्वक जवाब दिया।<br>➢ इसने कालिकट पर बमबारी की और कोचीन व कन्नानोर के शासकों से लाभकारी संधियाँ करने में सफल हुआ। |
| **फ्रांसिस्को डी अल्मेडा** | ➢ ये भारत में पहले पुर्तगाली गवर्नर थे जिसने भारत में पुर्तगालियों की स्थिति मज़बूत करने का प्रयास किया।। |

| | |
|---|---|
| | ➢ जब पुर्तगाली फैक्ट्री पर आक्रमण हुआ तो उसने जवाबी कार्रवाई करते हुए कई अरब जहाजों को ज़ब्त कर लिया तथा कालीकट पर बमबारी की।<br>➢ इसने अंजादीवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनाए।<br>➢ इसका प्रमुख उद्देश्य हिन्द महासागर पर पुर्तगालियों का वर्चस्व स्थापित करना था।<br>➢ इसने ब्लू वॉटर पॉलिसी और कार्टेज़ प्रणाली जैसी नीतियाँ अपनाई।<br>➢ **ब्लू वॉटर पॉलिसी:** इसके अंतर्गत सुरक्षात्मक दृष्टिकोण की बजाय पुर्तगाली व्यापार को स्थापित करने के उद्देश्य से हिन्द महासागर की किलेबंदी की गई थी।<br>➢ **कार्टेज़ प्रणाली:** यह 16वीं सदी में हिन्द महासागर में पुर्तगालियों द्वारा जारी किया गया एक समुद्री व्यापार लाइसेंस होता था। यह 20वीं शताब्दी के ब्रिटिश नेविसर्ट प्रणाली के समान था। |
| **अल्फ़ांसो डी अल्बुकर्क** | ➢ ये भारत में पुर्तगाली शक्ति के वास्तविक संस्थापक तथा भारत में दूसरे पुर्तगाली गवर्नर थे।<br>➢ इसने हिन्द महासागर में अन्य जहाजों के लिए परमिट प्रणाली शुरू की।<br>➢ इसने 1510 में बीजापुर के सुल्तान से गोवा छीन लिया। इसी के साथ गोवा सिकंदर महान के बाद यूरोपीय लोगों के अधीन आने वाला पहला भारतीय क्षेत्र बन गया।<br>➢ इसने पुर्तगालियों को स्थानीय महिलाओं से विवाह करने के लिए प्रोत्साहित किया और सती प्रथा को समाप्त करने पर बल दिया। |
| **नीनो दा कुन्हा** | ➢ इन्हें 1529 में पुर्तगाली गवर्नर के रूप में नियुक्त किया गया ।<br>➢ इसने पुर्तगाली मुख्यालय को कोचीन से गोवा स्थानांतरित किया।<br>➢ 1534 में गुजरात के बहादुर शाह ने हुमायूँ के विरुद्ध सहायता के बदले पुर्तगालियों को बेसिन दे दिया और दीव देने का भी वादा किया।<br>➢ 1537 में बहादुर शाह की पुर्तगालियों द्वारा हत्या कर दी गई। |

**सीखने की ट्रिक**

V P - F A N

वास्को डी गामा | पेड्रो अल्वारेज़ काब्राल | फ्रांसिस्को डी अल्मेडा | अलफांसो डी अल्बुकर्क | नीनो दा कुन्हा

Toppersnotes Unleash the topper in you

**1.2 भारत में प्रमुख पुर्तगाली गतिविधियाँ:**

- ✓ पुर्तगालियों ने भारत में गोवा से लेकर मुंबई, दमन और दीव तथा आगे गुजरात तक कब्जा कर लिया था।
- ✓ इन्होंने पूर्वी तट पर सैन थोम (चेन्नई में) और नागपट्टिनम (आंध्र में) में सैन्य चौकियाँ और बस्तियाँ स्थापित की।
- ✓ लगभग 1579 के शाही फ़रमान के माध्यम से उन्हें बंगाल के सतगाँव में व्यापारिक गतिविधियों के लिए बसने की अनुमति मिली।

**1.3 भारत में पुर्तगाली प्रशासन**

- ✓ **महत्वपूर्ण पद:**
  - वायसराय: ये प्रशासन का प्रमुख का प्रमुख होता था जो तीन वर्षों तक अपने सचिव और बाद में एक परिषद के साथ कार्य करता था।
  - वेडोर दा फज़ेंडा: ये राजस्व, माल ढुलाई और बेड़े की देखरेख के लिए ज़िम्मेदार होता था।
  - कप्तान: ये किलों का प्रभारी होता था।

- ✓ **नीतियाँ:**
  - इन्होंने नमक के उत्पादन पर एकाधिकार कर लिया।
  - इन्होंने सीमा शुल्क गृह बनवाया और तंबाकू पर शुल्क लगाना प्रारंभ किया।
  - पुर्तगालियों ने दासों का व्यापार शुरू किया तथा हिंदू और मुस्लिम बच्चों को ख़रीद कर उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।

### 1.4 पुर्तगालियों की धार्मिक नीति

- ✓ जेसुइट मिशनरी ईसाई धर्म को बढ़ावा देने के उत्साह से प्रेरित होकर अकबर सहित कई मुग़ल सम्राटों को धर्मांतरित करने का प्रयास किया तथा इसी क्रम में कई मिशन (1579, 1590 और 1595) भारत भेजे गये ।
- ✓ अकबर ने धार्मिक रुचि के कारण रूडोल्फो एक्वाविवा और एंटोनियो मोंसेरेट जैसे जेसुइट्स का स्वागत किया। हालांकि धर्मांतरण के प्रयास सफल नहीं हुए किन्तु इनका बौद्धिक प्रभाव अत्यधिक था।
- ✓ जहाँगीर पहले इनके प्रति उदासीन था किन्तु बाद में 1606 में इसने पुनः समर्थन देना शुरू किया और जेसुइट्स को लाहौर में चर्च व कॉलेजियम बनाए रखने की अनुमति दी।
- ✓ 1608 तक आगरा में लगभग 20 बपतिस्मा का होना पुर्तगाली प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

## 2. डच

- ✓ 1596 **में** कॉर्नेलिस डी हाउटमैन सुमात्रा और बैंटम पहुँचने वाला पहला डच व्यक्ति था।
- ✓ 1602 **में** कई व्यापारिक कंपनियों का विलय हुआ तथा नीदरलैंड की **संयुक्त ईस्ट इंडिया कंपनी** (UEIC) की स्थापना की गई।

### 2.1 भारत में डच बस्तियाँ

- ✓ डचों ने 1605 में आंध्र प्रदेश के **मसुलीपट्टनम** में पहली फैक्ट्री स्थापित की।
- ✓ इनके द्वारा 1609 में मद्रास के उत्तर में स्थित **पुलिकट** में भी फैक्ट्री स्थापित की गई।
- ✓ **अन्य प्रमुख फैक्ट्रियाँ:**
  - **सूरत** (1616)
  - **बिमलिपट्टनम** (1641)
  - **कराईकल** (1645)
  - **चिनसुरा** (1653)
  - **बारानगर, कासिमबाजार (मुर्शिदाबाद के पास)**
  - **बालासोर, पटना** (1632)**:** हालाँकि **पटना** स्थित **फैक्ट्री इसी वर्ष बंद हो गई**
  - **नगपट्टनम** (1658)
  - **कोचीन** (1663)

### 2.2 भारत में डचों के अधीन व्यापार

- ✓ **उत्पादन:**
  - **इंडिगो (नील): यमुना घाटी और मध्य भारत**
  - **कपड़ा और रेशम: बंगाल, गुजरात और कोरोमंडल तट**
  - **सॉल्टपीटर(शोरा): बिहार**
  - **अफ़ीम और चावल: गंगा घाटी**
  - **काली मिर्च और मसालों** के व्यापार पर एकाधिकार

### 2.3 डचों का पतन

- ✓ डच बाद में मलय द्वीप समूह के व्यापार में उलझ कर रह गए।
- ✓ तीसरे आंग्ल-डच युद्ध (1672–74) में बंगाल की खाड़ी में डच सेना ने अंग्रेजी जहाज़ों पर हमला किया। परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने प्रतिक्रिया करते हुए हूगली की लड़ाई (1759) में डचों को पराजित किया।
- ✓ कोलाचेल की लड़ाई (1741) में त्रावणकोर के राजा मार्तण्ड वर्मा ने डचों को हराकर मालाबार में डच शक्ति का अंत कर दिया।
- ✓ **प्रमुख आंग्ल-डच संधियाँ**
  - **आंग्ल-डच संधि (1814)**: यह डच और अंग्रेजों के बीच की गई महत्वपूर्ण संधि थी जिसके माध्यम से डच कोरोमंडल और डच बंगाल को डचों को लौटाया गया।
  - **आंग्ल-डच संधि (1824)**: इन क्षेत्रों को अंग्रेजों को वापस **लौटा दिया गया** और 1 मार्च, 1825 ई. तक डचों के लिए संपत्ति और प्रतिष्ठानों के सभी हस्तांतरण सुनिश्चित करना बाध्यकारी बना दिया।

## 3. अंग्रेज़

- ✓ वे प्रमुख **कारक** इस प्रकार है **जिन्होंने** अंग्रेजों के भारत **आगमन में योगदान दिया**:
  - रानी एलिज़ाबेथ प्रथम के चार्टर के तहत फ्रांसिस ड्रेक ने 1580 में विश्व की यात्रा की।
  - 1588 में स्पेनिश आर्माडा पर हुई अंग्रेज़ों की विजय।
  - 1599 में इंग्लैंड के व्यापारियों के एक समूह 'मर्चेंट एडवेंचरर्स' ने एक कंपनी बनाई।
  - 31 दिसंबर, 1600 को रानी एलिज़ाबेथ प्रथम ने 'गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इनटू द ईस्ट इंडीज़' नामक कंपनी को एक चार्टर जारी करते हुए विशेष व्यापार अधिकार प्रदान किए ।
  - शुरू में यह 15 वर्षों के लिए व्यापारिक एकाधिकार था जिसे मई 1609 में अनिश्चितकाल के लिए बढ़ा दिया गया।
  - जब डचों का ध्यान ईस्ट इंडीज़ की ओर आकर्षित हुआ तब अंग्रेज़ों ने भारतीय व्यापार पर ध्यान केंद्रित किया।

### 3.1 ईस्ट इंडिया कंपनी का विकासक्रम

| | |
|---|---|
| 1609 | ➢ कैप्टन हॉकिन्स सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के उद्देश्य से जहाँगीर के दरबार में पहुँचे लेकिन पुर्तगालियों के विरोध के कारण सफल नहीं हुए।<br>➢ इसने नवम्बर, 1611 में आगरा छोड़ दिया। |
| 1611 | ➢ मसुलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया; 1616 में फैक्ट्री स्थापित की। |
| 1612 | ➢ कैप्टन थॉमस बेस्ट ने सूरत के तट पर पुर्तगालियों को हराया।<br>➢ 1613 में जहाँगीर से सूरत में फैक्ट्री स्थापित करने की अनुमति मिली। |
| 1615 | ➢ जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो जहाँगीर के दरबार में आए और फरवरी 1619 तक रहे। |
| 1619 | ➢ आगरा, अहमदाबाद और भड़ौच में फैक्ट्रियों की स्थापना से सम्बंधित विशेषाधिकार प्राप्त किये। |
| 1632 | ➢ गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा जारी 'स्वर्णिम फरमान' प्राप्त किया जिसके तहत प्रति वर्ष 500 पैगोडा के भुगतान के बदले उन्हें गोलकुंडा के पत्तनों के जरिये स्वंतंत्र व्यापार करने की अनुमति मिल गई। |
| 1633 | ➢ हरिहरपुर और बालासोर (ओडिशा) में फैक्ट्रियाँ स्थापित की गई। |
| 1662 | ➢ पुर्तगाल के राजा ने पुर्तगाल की राजकुमारी कैथरीन से विवाह करने पर राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में बॉम्बे उपहार में दिया था। |
| 1687 | ➢ पश्चिमी प्रेसीडेंसी का मुख्यालय सूरत से बॉम्बे स्थानांतरित किया गया। |
| 1691 | ➢ औरंगज़ेब द्वारा शाही फ़रमान जारी किया गया। |

| | |
|---|---|
| 1698 | ➢ अंग्रेजों ने सुतानाती, गोविंदपुर और कालीकत्ता की जमींदारी हासिल की और फोर्ट विलियम को पूर्वी प्रेसीडेंसी सीट के रूप में स्थापित किया। |
| 1717 | ➢ मुगल बादशाह फर्रुखसियर द्वारा शाही फरमान जारी किया गया।<br>**फर्रुखसियर का शाही फरमान:**<br>➢ 1715 में जॉन सरमन द्वारा फर्रुखसियर से प्राप्त फरमान के अनुरूप कंपनी को बंगाल, गुजरात और हैदराबाद में विशेषाधिकार प्राप्त हुए। इसे कंपनी का मैग्नाकार्टा' कहा जाता है और इसके मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं-<br>✓ **बंगाल में:**<br>▪ आयात और निर्यात पर अतिरिक्त सीमा शुल्क से छूट दी गई जिसके बदले पूर्व निर्धारित 3,000 रुपये की मामूली वार्षिक राशि का भुगतान करना आवश्यक था।<br>▪ इस प्रकार की वस्तुओं के परिवहन हेतु दस्तक (सरकारी पास) जारी करने की अनुमति दी गई।<br>▪ कलकत्ता के आसपास भूमि किराए पर लेने की अनुमति मिली।<br>✓ **हैदराबाद में:**<br>▪ व्यापार में करों से छूट संबंधी विशेषाधिकार प्राप्त हुआ।<br>▪ अंग्रेजों को केवल मद्रास के लिए प्रचलित किराया ही देना पड़ता था।<br>✓ **सूरत में:**<br>▪ वार्षिक 10,000 रुपये के भुगतान के बदले सभी प्रकार के करों से छूट प्राप्त हुई।<br>✓ **अन्य विशेषाधिकार:**<br>▪ बम्बई में कंपनी द्वारा ढाले गए सिक्कों को पूरे मुगल साम्राज्य में वैध मुद्रा के रूप में मान्यता मिली। |

## 4. डेनिश (डेनमार्क)

- ✓ 1616 में डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई।
- ✓ 1620 में तंजावुर के पास ट्रेंकोबार में एक फैक्ट्री स्थापित की गई।
- ✓ इनकी मुख्य बस्ती कलकत्ता के पास सेरामपुर में स्थित थी।
- ✓ 1845 में सभी डेनिश फैक्ट्रियाँ ब्रिटिश सरकार को बेच दी गईं।
- ✓ डेनिश लोग व्यापार की अपेक्षा अपने मिशनरी कार्यों के लिए अधिक प्रसिद्ध हैं।

## 5. फ्रांसीसी

### 5.1 भारत में फ्रांसीसी केंद्रों की स्थापना

- ✓ भारत में व्यापार के उद्देश्य से आने वाले अंतिम यूरोपीय लोग फ्रांसीसी थे। फ्रांस के राजा लुई XIV के मंत्री कोल्बर्ट ने 1664 में फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की।
- ✓ 1667 में, फ्रांस्वा कैरन ने भारत के लिए एक अभियान का नेतृत्व किया और सूरत में एक कारखाना स्थापित किया। कैरन के साथ आए एक फ़ारसी मर्कारा ने 1669 में मसूलीपट्टनम में एक और फ्रांसीसी कारखाना स्थापित किया।
- ✓ 1673 में बंगाल के मुगल सूबेदार शाइस्ता खान से अनुमति प्राप्त कर फ्रांसीसियों ने कलकत्ता के पास चंद्रनगर में एक बस्ती की स्थापना की।
- ✓ 1674 में फ्रांसीसियों ने पांडिचेरी और चंद्रनगर में अपनी बस्तियाँ स्थापित की जिनमें पांडिचेरी को मुख्य केंद्र बनाया गया।

## 5.2 पांडिचेरी - भारत में फ्रांसीसी शक्ति का केंद्र

- ✓ 1674 में पांडिचेरी की स्थापना हुई और फ्रांसिस मार्टिन फ्रांसीसी गवर्नर बने।
- ✓ फ्रांसीसियों ने भारत के तटीय क्षेत्रों में फैक्ट्रियाँ स्थापित की। इनके प्रमुख व्यापारिक केंद्र माहे, कराईकल, बालासोर और कासिम बाजार थे।
- ✓ 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया लेकिन बाद में रिजविक की संधि के अंतर्गत इसे पुनः लौटा दिया गया।

## 5.3 ब्रिटिश-फ्रांसीसी प्रतिद्वंद्विता

- ✓ भारत में आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष 12वीं सदी से इंग्लैंड और फ्रांस के बीच चली आ रही पारंपरिक शत्रुता का परिणाम था।
- ✓ यह संघर्ष ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध से शुरू होकर सात वर्षीय युद्ध के अंत तक चला।
- ✓ 1740 में दक्षिण भारत की राजनीतिक स्थिति अत्यंत अस्थिर थी। हैदराबाद के निज़ाम आसफ जाह वृद्ध हो चुके थे और पश्चिम में मराठों से भी जूझ रहे थे।
- ✓ हैदराबाद का पतन मुस्लिम विस्तारवाद के अंत का संकेत था और अंग्रेजों ने अपनी दूरदर्शितापूर्ण योजनाएँ तैयार कर ली थी।

**अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच कर्नाटक युद्ध:**

(यूरोपीय लोगों ने कोरोमंडल तट और इसके आंतरिक क्षेत्र को 'कर्नाटक' का नाम दिया था)

| युद्ध | समयावधि | मुख्य कारण | प्रमुख घटनाएँ | परिणाम / संधि |
|---|---|---|---|---|
| **प्रथम कर्नाटक युद्ध** | 1740–1748 | ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध के कारण यूरोप में चल रहे आंग्ल-फ्रांसीसी युद्ध का परिणाम | ➢ अंग्रेज़ी नौसेना (बॉर्नेट के नेतृत्व में) द्वारा फ्रांसीसी जहाजों पर कब्ज़ा<br>➢ एडमिरल ला बोर्डोनै (मॉरिशस के फ्रांसीसी गवर्नर) ने 1746 में मॉरीशस के बेड़े की मदद से मद्रास पर कब्ज़ा कर लिया | **एक्स-ला-शैपेल की संधि (1748):** मद्रास अंग्रेजों को वापस सौंप दिया गया और फ्रांसीसियों को उत्तरी अमेरिका के क्षेत्र प्राप्त हुए।<br>इस युद्ध से यह स्पष्ट हुआ कि एक छोटी लेकिन अनुशासित सेना भी एक बड़ी भारतीय सेना को आसानी से पराजित कर सकती है। |
| **द्वितीय कर्नाटक युद्ध** | 1749–1754 | फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने साम्राज्यवादी नीति अपनाई, जिससे दक्षिण भारत में अपनी शक्ति और फ्रांसीसी राजनीतिक प्रभाव को बढ़ाया जा सके। | ➢ हैदराबाद में नासिर जंग और मुज़फ़्फ़र जंग के बीच उत्तराधिकार संघर्ष<br>➢ कर्नाटक में अनवरुद्दीन बनाम चंदा साहिब के मध्य उतराधिकार संघर्ष<br>➢ फ्रांसीसियों ने मुज़फ़्फ़र जंग और चंदा साहिब का समर्थन किया जबकि अंग्रेज़ों ने नासिर जंग और अनवरुद्दीन का पक्ष लिया। | **पांडिचेरी की संधि (1754):** मोहम्मद अली खाँ वल्लाजाह को नवाब के रूप में मान्यता मिली तथा फ्रांसीसी हस्तक्षेप समाप्त हो गया |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | | | ➢ रॉबर्ट क्लाइव ने अर्काट पर आक्रमण कर उसे जीत लिया। मैसूर और तंजावुर में भी इसे सफलता मिली।<br>➢ फ्रांसीसियों को भारी आर्थिक हानि हुई और 1754 में डुप्ले को वापस बुला लिया गया।<br>➢ डुप्ले के उत्तराधिकारी गोडेह्यू भारत में फ्रांसीसी गवर्नर-जनरल बने। उन्होंने अंग्रेजों से समझौते की नीति अपनाई और उनके साथ संधि की।<br>➢ इसके बाद अंग्रेज़ों और फ्रांसीसियों ने एक-दूसरे के क्षेत्रों में हस्तक्षेप न करने का निर्णय लिया। | |
| **तृतीय कर्नाटक युद्ध** | 1758–1763 | सप्तवर्षीय युद्ध (ब्रिटेन बनाम फ्रांस) | ➢ फ्रांसीसियों ने सेंट डेविड और विजयनगरम पर कब्ज़ा किया<br>➢ अंग्रेजों ने मछलीपट्टनम में फ्रांसीसी बेड़े को हराया<br>➢ वांडीवाश का युद्ध तृतीय कर्नाटक युद्ध का निर्णायक युद्ध था जिसमें 1760 में अंग्रेज विजयी हुए। | ➢ **पेरिस की संधि (1763):** फ्रांसीसियों को उनकी बस्तियों का उपयोग केवल व्यापारिक उद्देश्यों के लिए करने की अनुमति दी गई और किलेबंदी पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया।<br>➢ इस युद्ध के बाद भारत में उनका राजनीतिक प्रभाव समाप्त हो गया और वे केवल कुछ छोटी बस्तियों और व्यापार तक सीमित रह गए।<br>➢ भारत में स्थित फ्रांसीसी क्षेत्रों को संरक्षित राज्य घोषित किया गया और उन्हें स्थायी सेना रखने से वंचित कर दिया गया। |

**फ्रांसीसियों के विरुद्ध अंग्रेजों की सफलता के कारण:**

- अंग्रेज़ी कंपनी एक निजी उपक्रम थी जिस पर सरकार का हस्तक्षेप कम था जबकि फ्रांसीसी कंपनी राज्य प्रायोजित थी और पूरी तरह फ्रांसीसी सरकार के नियंत्रण में थी।
- अंग्रेज़ी नौसेना फ्रांसीसी नौसेना से अधिक शक्तिशाली और उन्नत थी।
- अंग्रेज़ों के पास कलकत्ता, बम्बई और मद्रास जैसे प्रमुख केंद्र थे जबकि फ्रांसीसियों के पास केवल पांडिचेरी ही था।
- फ्रांसीसी कंपनी आर्थिक रूप से भी कमजोर थी जबकि ब्रिटिश कंपनी की आर्थिक स्थिति मजबूत थी।

- ब्रिटेन की शाही नौसेना उस समय की अन्य यूरोपीय शक्तियों की तुलना में सबसे उन्नत मानी जाती थी।
- ब्रिटेन में स्थिर सरकार और योग्य शासकों ने अंग्रेज़ों को स्थायित्व प्रदान किया।
- औद्योगिक क्रांति के दौर में ब्रिटेन में तीव्र तकनीकी प्रगति हुई।
- एक अनुशासित और अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना अंग्रेजों के लिए लाभकारी सिद्ध हुई ।
- अन्य यूरोपीय शक्तियों की तुलना में अंग्रेज़ों का धार्मिक मुद्दों पर कम ध्यान था जो उनके लिए लाभदायक रहा।
- अंग्रेजों द्वारा ऋण बाजार के उपयोग ने उन्हें पूंजी की कमी से बचाया।

इन सभी कारणों ने अंग्रेजों को एक शक्तिशाली औपनिवेशिक शक्ति के रूप में स्थापित किया जिन्होंने अंततः पूरे भारत पर स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) तक शासन किया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

# 2 CHAPTER मुग़ल साम्राज्य का पतन

➢ औरंगज़ेब के शासनकाल (1658-1707) के दौरान कठोर धार्मिक नीतियों, संसाधनों के अति-दोहन और सीमांत सुरक्षा की उपेक्षा के परिणामस्वरूप मुग़ल साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो चुका था।

➢ उसकी मृत्यु के बाद अयोग्य उत्तराधिकारियों और आंतरिक संघर्षों के कारण साम्राज्य और भी कमज़ोर हो गया जिससे शक्तिशाली क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ।

➢ इस बढ़ती अस्थिरता ने साम्राज्य को विदेशी आक्रमणों के प्रति संवेदनशील बना दिया जिसके चलते 1739 में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण करके लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया और करनाल में मुग़ल सेना को पराजित कर दिया था।

## विदेशी आक्रमण

**1. नादिर शाह का आक्रमण ,1739 (ईरान/फारस का सम्राट)**

**1.1 आक्रमण के कारण:**

✓ 1736 में मुहम्मद शाह रंगीला ने फारसी दरबार के साथ सभी राजनयिक संबंध तोड़ लिए।

✓ मुहम्मद शाह रंगीला ने नादिर शाह के दूत को बंदी बना लिया जिससे संभवतः वह क्रोधित हो गया।

✓ साथ ही रंगीला ने उन अफगान सरदारों को शरण दी थी जो नादिर शाह के अफगानिस्तान पर आक्रमण के समय उससे बचकर भाग आए थे।

✓ ऐसा भी माना जाता है कि निज़ाम-उल-मुल्क और सआदत खान ने नादिर शाह को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया था।

**1.2 नादिर शाह के आक्रमण का क्रम**

✓ उसने जलालाबाद, पेशावर पर कब्जा किया और लाहौर की ओर बढ़ गया।

✓ लाहौर के गवर्नर ज़कारिया खान ने बिना अधिक विरोध किए आत्मसमर्पण कर दिया।

✓ 1739 ई. में नादिरशाह और मुहम्मद शाह के मध्य करनाल में युद्ध हुआ।

**1.3 आक्रमण का परिणाम**

✓ इस युद्ध में मुहम्मद शाह पराजित हुआ और 25 करोड़ रुपये का मुआवजा देने पर सहमत हुआ।

✓ सिंध, पश्चिमी पंजाब और काबुल सहित सिंधु- पार के प्रांत नादिर शाह को सौंप दिए गए।

✓ इसी युद्ध में नादिर शाह प्रसिद्ध कोहिनूर हीरा भी अपने साथ ले गया ।

**2. अहमद शाह अब्दाली (अहमद शाह दुर्रानी)**

✓ यह नादिर शाह का उत्तराधिकारी था जिसने 1748 और 1767 के बीच भारत पर कई बार आक्रमण किया। इसने 1757 में दिल्ली पर कब्जा कर मुग़ल सम्राट पर एक अफ़ग़ान संरक्षक नियुक्त किया था।

✓ अब्दाली ने आलमगीर द्वितीय को मुगल सम्राट के रूप में और रोहिल्ला सरदार नजीब-उद-दौला को साम्राज्य के मीर बख्शी के रूप में मान्यता दी।

✓ 1759 में अब्दाली मराठों से बदला लेने के लिए पुनः भारत आया और 1761 में पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों को पराजित किया ।

**पानीपत का तीसरा युद्ध, 1761**

- यह युद्ध सदाशिव राव के नेतृत्व में मराठों और अहमद शाह अब्दाली के नेतृत्व में अफ़गान सेनाओं और दो भारतीय मुस्लिम सहयोगियों (दोआब के रोहिल्ला अफ़गान और अवध के नवाब शुजा-उद्-दौला) के बीच हुआ।
- सेना: फ्रांसीसी घुड़सवार सेना ने अफगानों की भारी घुड़सवार सेना और घुड़सवार तोपखाने (ज़म्बुराक और जेज़ाइल) के खिलाफ मराठों का समर्थन किया।
- शुजाउद्दौला द्वारा अफ़गानों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। अफ़गानों ने मराठों की आवश्यक सेवाओं को बाधित करके उन्हें कमज़ोर कर दिया।

## औरंगजेब के बाद के प्रमुख मुगल शासक

| मुग़ल सम्राट | मुख्य विशेषताएँ |
|---|---|
| **बहादुर शाह I (1709–1712)** | ➢ ये औरंगज़ेब का सबसे बड़ा पुत्र था।<br>➢ इसने मराठों, राजपूतों और जाटों के साथ शांतिपूर्ण नीति अपनाई।<br>➢ इसने मराठों को सरदेशमुखी की अनुमति दी लेकिन चौथ देने में असफल रहे।<br>➢ इसने अमीरों के प्रति समझौते की नीति अपनाई और उन्हें उपयुक्त क्षेत्र और पद प्रदान किये।<br>➢ इसने जज़िया कर कभी समाप्त नहीं किया।<br>➢ इसे ख़फ़ी ख़ान ने "शाह-ए-बेख़बर" की उपाधि दी। |
| **जहाँदार शाह (1712–1713)** | ➢ इसने जज़िया कर समाप्त किया और इज़ारा प्रणाली लागू की।<br>➢ इसने ज़ुल्फ़िकार ख़ान को प्रधानमंत्री नियुक्त किया । |
| **फर्रुखसियर (1713–1719)** | ➢ ये सैय्यद बंधुओं (अब्दुल्ला ख़ान और हुसैन अली, जिन्हें 'किंग मेकर्स' कहा जाता है) की सहायता से सम्राट बना।<br>➢ इसने जज़िया और तीर्थयात्रा कर को समाप्त करके धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई।<br>➢ इसने 1717 में अंग्रेजों के लिए व्यापारिक फ़रमान जारी किया।<br>➢ इसके द्वारा सिख नेता बंदा बहादुर को फाँसी दी गई।<br>➢ कालांतर में सैय्यद बंधुओं और फर्रुखसियर के बीच संघर्ष हुआ जिसके परिणामस्वरूप सैय्यद बंधुओं और मराठों ने मिलकर फर्रुखसियर की हत्या कर दी।<br>➢ यह पहली बार था जब अमीरों द्वारा किसी मुग़ल सम्राट की हत्या की गई थी। |
| **रफ़ी उद-दराजात (फरवरी – जून 1719)** | ➢ इसे सैय्यद बंधुओं द्वारा फ़र्रुख़सियर के स्थान पर सिंहासन पर बैठाया गया लेकिन चार माह बाद ही क्षय रोग से इसकी मृत्यु हो गई।<br>➢ इसके शासनकाल में निकुसियर (औरंगज़ेब का पोता) ने विद्रोह किया और मित्रसेन की सहायता से आगरा में सम्राट बन गया। |
| **रफ़ी उद-दौला / शाहजहाँ II (जून – सितम्बर 1719)** | ➢ यह भी सैय्यद बंधुओं की मदद से सिंहासन पर बैठा ।<br>➢ यह अफ़ीम का आदी था।<br>➢ इसने सबसे कम समय तक शासन किया क्योंकि इसकी भी क्षयरोग से शीघ्र मृत्यु हो गई थी। |

| | |
|---|---|
| **मुहम्मद शाह (1719–1748)** | ➢ विलासितापूर्ण जीवनशैली के कारण इसे 'रंगीला' की उपाधि दी गई।<br>➢ इसने निज़ाम-उल-मुल्क (चिन क़िलिच ख़ान) के साथ मिलकर सैयद बंधुओं की हत्या कर दी।<br>➢ 1724 में निज़ाम-उल-मुल्क वज़ीर बना और स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना की।<br>➢ 1739 में नादिर शाह ने करनाल के युद्ध में मुगलों को हराया और बाद में मुहम्मद शाह को बंदी बना लिया और सिंधु नदी के पश्चिमी क्षेत्रों को फ़ारसी साम्राज्य में मिला लिया।<br>➢ इसके शासनकाल में कई स्वायत्त राज्यों का उदय हुआ:<br>• निज़ाम-उल-मुल्क - दक्कन<br>• सआदत ख़ान - अवध<br>• मुर्शिद कुली ख़ान - बंगाल, बिहार और उड़ीसा |
| **अहमद शाह (1748–1754)** | ➢ ये एक अयोग्य शासक था जिसने राज्य का कार्यभार उधम बाई (महारानी माँ) को सौंप दिया।<br>➢ इसने दिल्ली पर आक्रमण किया और मुल्तान सहित पंजाब भी उसे सौंप दिया गया।<br>➢ उसके वज़ीर इमाद-उल-मुल्क ने उसे सलीमगढ़ में कैद कर लिया। |
| **आलमगीर II (1754–1758)** | ➢ ये जहाँदार शाह का पोता था।<br>➢ प्रसिद्ध प्लासी का युद्ध (लगभग 1757 ई.) इसके शासनकाल में हुआ था।<br>➢ इसके वज़ीर इमाद-उल-मुल्क ने इसकी हत्या कर दी। |
| **शाहजहाँ III (1758–1759)** | ➢ ये दिसंबर, 1758 में इमाद-उल-मुल्क की सहायता से सिंहासन पर बैठा।<br>➢ बाद में मराठों द्वारा इसे पदच्युत कर दिया गया। |
| **शाह आलम II / अली गौहर (1759–1806)** | ➢ इसके शासनकाल में दो निर्णायक युद्ध हुए - पानीपत का तीसरा युद्ध (1761) और बक्सर का युद्ध (1764)।<br>➢ इसने बंगाल के नवाब मीर कासिम और अवध के नवाब शुजाउद्दौला की संयुक्त सेनाओं के साथ मिलकर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध बक्सर का युद्ध (1764) लड़ा।<br>➢ इसे इलाहाबाद की संधि (1765) पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया गया और ईस्ट इंडिया कंपनी के संरक्षण में ले लिया गया तथा बाद में वह इलाहाबाद में रहने लगा। |
| **अकबर II (1806–1837)** | ➢ इसने हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक 'फूल वालों की सैर' नामक उत्सव की शुरुआत की।<br>➢ इसने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी।<br>➢ 1835 में मुग़ल बादशाहों के नाम से सिक्के जारी करने बंद कर दिए गये। |
| **बहादुर शाह II (1837–1857)** | ➢ ये अंतिम मुगल सम्राट और भारत के नाममात्र के प्रमुख थे। ये एक उर्दू कवि थे जो 'ज़फ़र' उपनाम से कविताएँ लिखते थे।<br>➢ इन्होंने 1857 के विद्रोह में भाग लिया और अंग्रेजों द्वारा रंगून निर्वासित कर दिया गया जहाँ 1862 में इनकी मृत्यु हो गई।<br>➢ कानूनी दृष्टि से महारानी विक्टोरिया की घोषणा के साथ ही मुगल साम्राज्य का अंत हो गया। |

## मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

1. **औरंगज़ेब की असहिष्णुपूर्ण नीतियाँ**
   - ✓ औरंगज़ेब की कठोर धार्मिक एवं दक्कन नीति के कारण मराठा, राजपूत और जाट जैसे समूह उनसे अलग हो गए।
   - ✓ उसकी असहिष्णुता ने पारंपरिक मुगल गठबंधनों को कमजोर किया और अधिक शत्रुओं को जन्म दिया।
2. **कमज़ोर उत्तराधिकारी और उत्तराधिकार युद्ध**
   - ✓ औरंगज़ेब का कोई भी उत्तराधिकारी मजबूत और स्थिर नेतृत्व प्रदान नहीं कर सका।
   - ✓ बाद के सम्राट अयोग्य थे और शक्तिशाली अमीरों के हाथों की कठपुतली बनकर रह गए।
   - ✓ 1707 से 1719 के बीच बार-बार हुए उत्तराधिकार युद्धों ने साम्राज्य को और भी अस्थिर कर दिया।
3. **अमीर वर्ग में संकट और आंतरिक सत्ता संघर्ष**
   - ✓ अमीरों में आपसी प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या और सत्ता संघर्ष बढ़ गए।
   - ✓ उन्होंने जागीरों से मिलने वाली सैन्य निधियों का उपयोग निजी लाभ के लिए किया जिससे सेना कमजोर हो गई।
4. **अप्रभावी सेना और बाहरी आक्रमण**
   - ✓ मुगल सेना अकुशल, हतोत्साहित और पुरानी विधियों के कारण अप्रचलित हो गई थी।
   - ✓ नादिर शाह (1739) और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने वित्तीय स्थिति को बुरी तरह नुकसान पहुँचाया।
5. **आर्थिक संसाधनों का ह्रास**
   - ✓ अमीरों (कुलीनों) और मनसबदारों की संख्या में वृद्धि के कारण जागीरों (भूमि अनुदान) की कमी हो गई।
   - ✓ राज्य का व्यय आय से अधिक हो गया, वहीं यूरोपीय व्यापारियों ने मुगल नियंत्रण को दरकिनार कर दिया जिससे राजकोष को नुकसान हुआ।
6. **कमज़ोर प्रशासनिक तंत्र**
   - ✓ मुगल शासन पूरी तरह सम्राट की निजी नेतृत्व क्षमता पर निर्भर था।
   - ✓ बाद के शासकों ने प्रशासन की उपेक्षा की जिससे अराजकता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला।
   - ✓ साम्राज्य इतना विशाल हो गया था कि कमज़ोर नेतृत्व के साथ प्रभावी ढंग से प्रबंधन करना संभव नहीं था।
7. **ज़मींदारों की बदलती निष्ठा**
   - ✓ ज़मींदारों ने कुलीनों के साथ सत्ता साझा की और राजस्व संग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
   - ✓ मुगल शासक जमींदारों को नियंत्रित नहीं कर सके जिससे वे अमीरों से मिलकर स्वतंत्र राज्य बनाने लगे।
   - ✓ उनकी बदलती निष्ठा से केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई और स्थानीय विद्रोह बढ़ गए।
8. **क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं का उदय**
   - ✓ औरंगज़ेब के शासनकाल में जाट, सिख और मराठा जैसी क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ।
   - ✓ उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा ने मुगलों के साथ निरंतर संघर्ष को जन्म दिया।
   - ✓ इससे शाही सत्ता खंडित हुई, जिसके परिणामस्वरूप पतन की प्रक्रिया और तीव्र हो गई ।

औरंगज़ेब की कठोर नीतियों से शुरू हुए मुग़ल साम्राज्य के पतन को कमज़ोर उत्तराधिकारियों और आंतरिक संघर्षों ने और बढ़ा दिया। केंद्रीय सत्ता के पतन के साथ ही क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ और नादिर शाह तथा अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों ने साम्राज्य की कमज़ोरी को उजागर किया जिससे 18वीं शताब्दी के मध्य तक साम्राज्य का विखंडन हो गया और भारत में ब्रिटिश विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

# 3 CHAPTER नवीन राज्यों का उदय

18वीं शताब्दी की शुरुआत में मुग़ल साम्राज्य के पतन के साथ केंद्रीय सत्ता कमजोर हो गई जिससे भारत में कई स्वतंत्र और अर्ध-स्वतंत्र क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। इन क्षेत्रीय शक्तियों से संबंधित स्थानीय शासकों, पूर्व मुग़ल सूबेदारों और शक्तिशाली अमीरों ने राजनीतिक शून्यता को भरने का कार्य किया। इस समय उदित हुए राज्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. **उत्तराधिकारी राज्य:** बंगाल, हैदराबाद, अवध आदि
2. **नए योद्धा राज्य:** मराठा, सिख और जाटों के नेतृत्व में गठित राज्य
3. **स्वतंत्र राज्य** मैसूर और राजपूत राज्य

## उत्तराधिकारी राज्य

- ये वे मुग़ल प्रांत थे जो केन्द्रीय सता से अलग होकर स्वतंत्र राज्य बन गए।
- हालाँकि इन राज्यों ने औपचारिक रूप से मुग़ल सम्राट की संप्रभुता को चुनौती नहीं दी लेकिन उनके गवर्नरों ने लगभग स्वतंत्र और वंशानुगत सत्ता की स्थापना कर ली थी।

| क्षेत्र | संस्थापक | प्रमुख घटनाएँ और उत्तराधिकार | सांस्कृतिक/प्रशासनिक विकास |
|---|---|---|---|
| **बंगाल** | मुर्शिद कुली खान | ➢ 1727 में पुत्र शुजाउद्दीन ने उत्तराधिकार संभाला<br>➢ 1740 में अलीवर्दी खान ने शुजाउद्दीन के उत्तराधिकारी सरफराज खान की हत्या करके स्वयं ने सत्ता संभाली और वार्षिक कर देकर खुद को मुगल सम्राट से स्वतंत्र कर लिया।<br>➢ 1756-1757 में अलीवर्दी खान के उत्तराधिकारी सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों से व्यापारिक अधिकारों के लिए युद्ध किया तथा 1757 में प्लासी की लड़ाई में हार के बाद ब्रिटिश नियंत्रण की शुरुआत हुई। | ➢ प्लासी के युद्ध में हुई हार ने बंगाल और बाद में पूरे भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की नींव रखी। |
| **अवध** | सआदत खान (बुरहान-उल-मुल्क) | ➢ इसने एक सुसज्जित, वेतनभोगी और प्रशिक्षित सेना का गठन किया।<br>➢ इसने बाद में नादिर शाह के दबाव में आत्महत्या कर ली।<br>➢ उत्तराधिकारी सफदर जंग और आसफ-उद-दौला ने दीर्घकालिक प्रशासनिक स्थिरता स्थापित की। | ➢ फैजाबाद और लखनऊ कला, साहित्य और शिल्प के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरे।<br>➢ इमामबाड़ों में क्षेत्रीय वास्तुकला परिलक्षित होती है।<br>➢ कथक नृत्य इस सांस्कृतिक समन्वय का परिणाम था। |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **हैदराबाद** | किलिच खान (निज़ाम-उल-मुल्क) | ➢ मुगल सम्राट ने मुबारिज़ खान को दक्कन का पूर्ण वायसराय नियुक्त किया था जिससे खिन्न होकर किलिच खान ने शकर-खेड़ा (1724) के युद्ध में मुबारिज़ खान से लड़ने का फैसला किया और वह सफल रहा।<br>➢ 1725 में वह वायसराय बने और उन्हें आसफ-जाह की उपाधि दी गई तथा उन्होंने दक्कन पर नियंत्रण कर लिया। | ➢ इन्होंने मुगल सत्ता की नाम मात्र की अधीनता स्वीकार करते हुए स्वायत्त शासन की स्थापना की। |

## <u>नए योद्धा राज्य</u>

➢ ये मुग़ल साम्राज्य के ख़िलाफ़ विद्रोहियों द्वारा स्थापित राज्य थे।

| | |
|---|---|
| **मराठा** | ➢ पेशवाओं के नेतृत्व में मराठों ने मालवा और गुजरात से मुग़ल सत्ता को उखाड़ फेंका और वहाँ अपनी सत्ता स्थापित की।<br>➢ मराठा सैनिक छापामार युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) पद्धति में निपुण थे। ये बीजापुर और अहमदनगर की दक्कन सल्तनतों के प्रशासनिक एवं सैन्य तंत्र में महत्वपूर्ण पदों पर रहे।<br>➢ इस समय तुकाराम, रामदास, वामन पंडित और एकनाथ आदि जैसे संतों के नेतृत्व में महाराष्ट्र में चले भक्तिकालीन आंदोलन के प्रभाव से सामाजिक एकता को बढ़ावा मिला। शाहजी भोंसले एवं उनके पुत्र शिवाजी ने राजनीतिक एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।<br>➢ पानीपत के तृतीय युद्ध (1761) में अब्दाली के हाथों मराठाओं की पराजय हुई किन्तु ये शीघ्र ही पुनः उभर कर आये और राजनीतिक वर्चस्व के संघर्ष में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बड़ी चुनौती प्रस्तुत की । |
| **सिख** | ➢ गुरु गोबिंद सिंह ने सिखों को सैन्य रूप में संगठित किया। बाद में सिखों को बंदा बहादुर के नेतृत्व में संगठित किया गया जिसकी 1708 में पराजय हुई और इसे मार दिया गया ।<br>➢ नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों के दौरान सिखों ने खुद को 12 मिस्लों या संघों में संगठित किया।<br>➢ महाराजा रणजीत सिंह (सुकरचकिया मिस्ल) ने पंजाब में एक मजबूत राज्य स्थापित किया और सभी 12 मिस्लों को एकीकृत किया। यह सिखों का मुग़ल शासन के खिलाफ़ सर्वाधिक शक्तिशाली रूप था।<br>➢ इन्होंने सतलुज से झेलम तक के क्षेत्र पर नियंत्रण किया तथा 1799 में लाहौर और 1802 में अमृतसर पर विजय प्राप्त की।<br>➢ रणजीत सिंह ने अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि द्वारा सतलुज के क्षेत्रों पर अंग्रेजी नियंत्रण को स्वीकार किया।<br>➢ अंग्रेजों ने इन्हें 1838 में शाह शुजा के साथ त्रिपक्षीय संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया और पंजाब से ब्रिटिश सैनिकों को मार्ग प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की।<br>➢ रणजीत सिंह की मृत्यु (1839) के बाद उत्तराधिकारी राज्य को एकीकृत नहीं रख सके और अंततः इस पर अंग्रेजों ने नियंत्रण कर लिया। |

| | |
|---|---|
| **जाट** | ➢ ये दिल्ली-मथुरा, आगरा क्षेत्र में निवास करने वाली कृषक एवं पशुपालक जाति थी।<br>➢ जाटों ने जहांगीर के समय से ही मुग़ल राज्य के विरुद्ध विद्रोह प्रारंभ कर दिया था।<br>➢ इन्होंने औरंगजेब की दमनकारी नीतियों के खिलाफ़ विद्रोह किया और चूड़ामन एवं बदन सिंह ने भरतपुर में जाट राज्य की स्थापना की।<br>➢ सूरजमल के समय जाट शक्ति अपने शिखर पर पहुँची।<br>➢ उनका राज्य गंगा से लेकर चंबल तक विस्तृत था जिसमें आगरा, मथुरा, मेरठ और अलीगढ़ के सूबे शामिल थे।<br>➢ सूरजमल की मृत्यु (1763) के बाद जाट राज्य का पतन हुआ और यह छोटे-छोटे ज़मींदारों के नियंत्रण में आ गया। |

## स्वतंत्र राज्य

➢ मुगल शासन के दौरान वतन जागीरों के रूप में इन्हें अत्यधिक स्वायत्तता प्राप्त थी।

| | |
|---|---|
| **राजपूत** | ➢ राजपूतों ने मुग़लों को सीमावर्ती क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की थी।<br>➢ औरंगज़ेब द्वारा मारवाड़ के उत्तराधिकार विवाद में हस्तक्षेप के कारण मुग़ल-राजपूत संबंधों में दरार आ गई।<br>➢ 18वीं शताब्दी में राजपूतों ने अपनी स्वतंत्रता पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने बहादुर शाह प्रथम को अजीत सिंह (1708) के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए मजबूर किया जिन्होंने जय सिंह द्वितीय और दुर्गादास राठौर के साथ एक गठबंधन बनाया था।<br>➢ हालांकि यह गठबंधन टूट गया और स्थिति अंततः मुग़लों के पक्ष में रही।<br>➢ अधिकांश बड़े राजपूत राज्य निरंतर आपसी संघर्षों में उलझे रहते थे।<br>➢ एक समय पर राजपूतों का नियंत्रण दिल्ली के दक्षिणी भाग से लेकर पश्चिमी तट तक के क्षेत्रों पर था। |
| **मैसूर** | ➢ मैसूर राज्य प्रारंभ में वाडयार वंश के अधीन था। इस क्षेत्र में कई शक्तियों की रुचि होने के कारण यह लगातार युद्ध का क्षेत्र बना रहा।<br>➢ अंततः, मैसूर राज्य का शासन हैदर अली और फिर उनके पुत्र टीपू सुल्तान के हाथों में आ गया लेकिन इनका शासन भी निरंतर संघर्षों और युद्धों से भरा रहा। इनके शासनकाल में कुल चार आंग्ल-मैसूर युद्ध हुए।<br>➢ अंततः, ब्रिटिशों ने सहायक संधि के तहत मैसूर को अपने नियंत्रण में ले लिया। |
| **त्रावणकोर (केरल)** | ➢ त्रावणकोर राज्य की स्थापना मार्तंड वर्मा ने की जिन्होंने त्रावणकोर को राजधानी बनाया और अपने राज्य की सीमाएँ कन्याकुमारी से कोचीन तक विस्तारित की। इन्होंने पश्चिमी तर्ज पर अपनी सेना का गठन किया।<br>➢ मार्तंड वर्मा ने कई वस्तुओं (जैसे-काली मिर्च) पर शाही एकाधिकार घोषित किया जिनके व्यापार के लिए लाइसेंस अनिवार्य कर दिया गया।<br>➢ मार्तंड वर्मा के बाद राम वर्मा (1758–1798 ई.) त्रावणकोर के शासक बने। |

18वीं शताब्दी में नई राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार कई क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ। इन्होंने कुछ शाही संस्थाओं को बनाए रखा लेकिन उनका उपयोग स्थानीय शासन और सत्ता के सुदृढ़ीकरण के लिए किया। इन क्षेत्रीय शक्तियों के पास आर्थिक और सैन्य शक्ति होने के बावजूद इनमें से कोई भी अखिल भारतीय स्तर पर न तो भारत को एकीकृत कर सका और न ही मुगल साम्राज्य को प्रतिस्थापित कर सका।